मोहयाल मित्र

मोहयाल भवन यमुनानगर का शिल्यानाश

11 सितंबर का दिन यमुनानगर के लिए ऐतिहासिक दिन रहा जब मोहयाल बिरादरी के हजारों लोगों की मौजूदगी में रायज़ादा बी.डी. बाली जी ने यमुनानगर के भव्य मोहयाल भवन का शिलान्याश किया। इस भवन में युवाओं के लिए विभिन्न वोकेशनल कोर्स शुरू किए जाएँगे, ताकि मोहयाल बिरादरी के अलावा अन्य वर्गों के युवा भी अपने पैरों पर खड़े हो सकें।

कार्यक्रम में सबसे पहले मोहयाल प्रार्थना हुई और मोहयाल ध्वज फहराया गया। बाद में मोहयाल–दिवस पर कार्यक्रम हुआ। जिसमें देश के विभिन्न हिस्सों से आए हज़ारों मोहयाल शामिल हुए। कार्यक्रम में जी.एम.एस. टीम के रूप में श्री पी.के. दत्ता, श्री डी.वी. मोहन, ले.जनरल जी.एल. बक्शी, श्री विनोद दत्ता, श्री योगेश मेहता, श्री ऋत मोहन और श्री दर्शनलाल बाली आदि शामिल हुए। यमुनानगर मोहयाल सभा के प्रधान विपन मोहन और महासचिव विनोद मेहता ने मंच संचालन किया एवं सभी बाहर से आए मेहमानों का स्वागत किया। इस अवसर पर रायज़ादा बी.डी. बाली ने कहा कि मोहयाल एक मार्शल कौम है। जिसने देश को वरिष्ठ सेना अधिकारी दिए। वहीं देश की आज़ादी में कई कुर्बानियाँ दीं। उन्होंने कहा कि अगर आप अच्छे कार्य करते हैं तो भगवान भी उनके साथ होता है।

मोहयाल सभा के प्रधान विपन मोहन और पानीपत से आए ऋत मोहन ने बताया कि मोहयाल सभा देश की आजादी से भी पहले की है। पाकिस्तान में भी आज़ादी से पहले लाहौर में मोहयाल भवन बनाया गया था। जिसे आज वहाँ मोहयाल मौहल्ला के नाम से जाना जाता है। श्री ओ.पी. मोहन, श्री विपन मोहन और श्री दर्शनलाल बाली एवं कुछ अन्य सदस्य पिछले दिनों पाकिस्तान गए थे और वहाँ से ईंट लाए थे। जिसे यमुनानगर मोहयाल भवन में लगाया जाएगा।

कार्यक्रम में पहुँची यमुनानगर नगर निगम की पार्षद संगीता सिंघल ने मोहयाल भवन के आसपास की सड़कों, पार्क निर्माण व स्ट्रीट लाइटों की सुविधा उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम के दौरान देश के विभिन्न हिस्सों से आए मोहयाल सभाओं की टीमों के साथ–साथ विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले लोगों को सम्मानित भी किया गया। रायज़ादा बी.डी. बाली जी ने बताया कि श्री ओ.पी. मोहन जी ने अपनी पत्नी श्रीमती शकुन्तला मोहन की तरफ से ऑडीटोरियम के लिए 250000 (पच्चीस लाख) रुपए दान देने की घोषणा की है।

सुरेन्द्र मेहता छिब्बर, *महासचिव,*
जगाधरी वर्कशाप, (मो.) 9355310880

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मोहयाल, मोह्यालियत और इतिहास-8
ममदोट और पिंड दादनखान के मोहन

मोहन जाति का इतिहास एक पुरानी पुस्तक ''पोथी राय सीघढ़'' में लिखा हुआ था। मोहयाल जातियों के इतिहास उनके राय (चारण–भाट) मौखिक रूप से गाकर, पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रखते थे। सौभाग्यवश उसी पोथी के इतिहास को एक और भाट ने कविता के रूप में लिखा जो अब ''जंगनामा मोहना'' के शीर्षक से हमें उपलब्ध हो सका है। यहाँ दिया जा रहा मोहन जाति का इतिहास मुख्यता उसी पर आधारित है।

महमूद ग़ज़नवी के आक्रमण के समय, सिंध नदी के तट पर, कालाबाग (पाकिस्तान) के समीप ''धनकोट'' मोहन जाति का गढ़ था। महमूद के बेटे मसूद (1030–40 ई.) ने मोहन समुदाय को वहाँ से विस्थापित करके ''अवाण'' मुस्लिम कबीले को वहाँ बसा दिया। बहुत समय भटकने के पश्चात एक अबनाशी राम मोहन मथुरा से **दिल्ली** आया और उस समय के सुलतान ''तिमरू शाह'' के पास एक ऊँची पदवी पा ली। उसके वंशजों ने भी सुलतान के उत्तराधिकारियों के समय ख्याति प्राप्त की। उस काल में एक हीरानन्द मोहन ने ममदोट (और फिरोज़पुर) के समीप एक दुर्ग बनाया और उसका नाम भी ''धनकोट'' रखा। यह अब पूरी मोहन जाति का केंद्र बन गया।

समय बीतता गया, दिल्ली में राज बदलते रहे, सुल्तानों के पश्चात भारत मुग़लों के आधीन हो गया।

औरंगज़ेब के निधन के पश्चात, बहादुर शाह के अतिरिक्त, कोई मुग़ल सक्षम उत्तराधिकारी नहीं हुआ, जिसमें कुशल राज संचालन की क्षमता हो। 1719–48 ई में मुहम्मद शाह **दिल्ली** के तख़्त पर था, उसके दरबार में मनसा राम मोहन एक ऊंचे पद पर आसीन था। पंजाब में स्थित बहुत बिगड़ रही थी। (मुहम्मद शाह के राजकाल में ही ईरान के नादर शाह ने भारत पर आक्रमण किया था और कई शताब्दियों से मुस्लिम शासकों द्वारा संचित धन, हीरे और तख्त ताऊस जैसी हर कीमती वस्तु लूट कर ले गया था) बादशाह ने मनसा राम को कुछ उत्तरदायित्व देकर, सेना के साथ पंजाब भेजा जो कार्य उसने सफलता पूर्वक पूरा किया।

मनसा राम का बेटा सेवा राम (साधू राम?) और पोता जयराम थे। जयराम अति सुन्दर (चन्द्र स्वरूप) युवक था। बादशाह की आज्ञा से वह **दिल्ली** लाया गया और बलात धर्म परिवर्तन करके उसका विवाह एक शहज़ादी से कर दिया गया। शरीयत (इस्लामिक विधि) के अनुसार उस धर्म का कोई अनुयायी किसी गैर–मुस्लिम (काफिर) से विवाह नहीं कर सकता जब तक वह भी मुस्लिम न बन जाए।

जब इस घटना की सूचना ममदोट पहुँची तो मोहन समुदाय में मुहम्मद शाह के विरुद्ध बहुत रोष फैल गया। ''हमारा मुसलमान तुध जयराम बनायो, ऐसा कभी अनर्थ दुष्ट सुनना नहीं पायो''... ''मोहन इकट्ठे हो गए सब दीनी पाती पट, लड़ेंगे मैदान सेती लाकर अस्सी हठ'', और उन्होंने इस निर्णय का संदेश बादशाह को भेज दिया। बादशाह ने अपने एक सेना नायक हशमत खान को ममदोट पर आक्रमण करने का आदेश दिया। इस युद्ध में मुग़ल सेना परास्त हुई और हशमत खान बंदी बना लिया गया। इसका बदला लेने के लिए बादशाह भारी सेना लेकर आया। गोविंद और मथुरा दास जो मोहन जाति के मुखिया थे, उन्होंने, निश्चित विनाश की संभावना को समझते हुए भी, डट कर मुकाबला करने का निर्णय लिया। ''मोहनां का सरदार अपना वंश सदावे, ऐसा कीजो जंग नारी पुरुष जस गावे'', और ऐसा ही युद्ध हुआ जो आठ पहर चलता रहा। ''हटना नहीं मैदान से, जंग ओह करण सवाये, इस युद्ध मोहनां अपने दिए सीस कटाये''। कोई मोहन योद्धा जीवित नहीं बचा। जंगनामा के अनुसार 288 मोहन सरदार शहीद हुए, जिनमें से मुख्य 72 के नाम भी दिए हैं। स्त्रियां अपने–अपने पति की लाश पहचान कर सती हो गयीं। बादशाह की आज्ञा से उनको किसी ने नहीं रोका। ''पिछे इक न रेहा, बादशाह ने यह मुनादी कीना, लोग सारे आखदे अब मोहन कोई न रहना''। पूरी मोहन जाति का विनाश हो गया।

प्रह्लाद राय उस समय मोहन कुल का भाट था, उसने **दिल्ली** जाकर जयराम को, जिसके नाम अब खिज़र और ठाकर शाह हो गए थे, ममदोट के नरसंहार का वृतांत सुनाया कि सारा कबीला मारे जाने से अब वंश का अन्त हो जायेगा। खिज़र लाहौर आकर अपने पिता साधू राम से मिला और उससे फिर विवाह करने का आग्रह किया। साधू राम का विवाह, भागा मल दत्त की पुत्री, भागवन्ती से हो गया और वह वीरम में रहने लगे। ''इक बूटा कई टहनियाँ, पत होवन हज़ार''। साधू राम के वंशजों में वहाँ सारंग, मानक, फोनू, हरदास राय और राधामल के नामों का उल्लेख है।

दो तीन पीढ़ियों के पश्चात उस परिवार का एक सदस्य दिलबाग राय भेरा अपने ससुराल आ गया। उसका पोता गुलाब राय पिंड दादनखान आकर ''मुहल्ला मोहनां'' बसा कर वहाँ रहने लगा। रस्सल स्ट्रैसी (दी हिस्ट्री आफ दी मोहयालज, 1911, पृष्ठ 42–42) के अनुसार, उसके समय पंजाब के विभिन्न नगरों, गाँवों में जितने मोहन परिवार थे वह सब गुलाब राय के वंशज थे। शेष कुछ परिवार जो अपने आपको ममदोट के मोहन मानते थे वह उनकी संतान थे जो ममदोट हत्याकाण्ड से किसी प्रकार बच गए थे।

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पिंड दादनखान के मोहन कुल की वंशावली

पिंड दादनखान के मोहन कुल के पास एक अतुल्य विरासत है, वह है उनकी वंशावली जिसमें गुलाब राय से लेकर अब तक के उनके वंशजों का विवरण है। गुलाब राय के चार बेटे थे। उनकी सभी पीढ़ियों (लगभग बारह) के नाम हैं।

यह वंशावली मेरे पिता जी के पास 1920 से थी और वह नई जानकारी एकत्रित करके इसका विस्तार करते रहते थे। पाकिस्तान बनने पर कंधे पर उठा कर जो थोड़ा सा सामान ला सके, उसमें वंशावली लाना नहीं भूले। जब यह मुझे मिली तो मैंने मोहयाल मित्र द्वारा सब परिवारों से उनकी संतान के ब्योरे मांगे और प्राप्त सामग्री भी उसमें जोड़ दी। मैंने सोचा के इसको भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने के लिए इसकी प्रतिलिपियाँ कई परिवारों के पास होने चाहिए। उसकी कम्प्यूटर टाइप प्रतिलिपियां (ए–4 साइज़, 24 पृष्ठ पुस्तिका) बनवा कर, जिसमें मोहन जाति का विस्तृत इतिहास भी है, जिन भाईयों ने अपनी सूचना भेजी थी, उन सबको भेज दीं। उनमें एक श्री ओम प्रकाश मोहन (पूर्व उप–प्रधान जीएमएस) भी थे, बांटने के लिए उन्होंने भी और 50 पुस्तिका, बहुत बढ़िया मोटे कागज़ पर, छपवाईं, एक सजिल्द प्रतिलिपि मैंने जीएमएस में सुरक्षित रखने के लिए भी भेजी।

इस प्रकार की सामूहिक वंशावली में सभी संबंधित परिवारों में जन्म आदि के समाचारों की प्रविष्टि नियमित रूप से होती रहनी चाहिए, जो भाई इस सेवाभार का दायित्व अब लेना चाहें, वह निमंत्रित हैं। इस अंकुर को एक शताब्दी तक मेरे परिवार ने सींचा है। वृद्धावस्था से अब आगे मैं इस सेवा के लिए असमर्थ हूँ।

''जंगनामा मोहनां'' उर्दू में है और इसकी जो प्रतिलिपि उपलब्ध है वह भी ''पोथी राय सीगढ़'' के समान लुप्त हो जाएगी, जो सज्जन इसको हिंदी में छपवाने का प्रबन्ध कर सकते हों वह भी सामने आऐं, उसमें लगभग 175 श्लोक है इसलिए यह एक छोटी सी पुस्तिका के रूप में होगी।

सम्पर्कः ***आर.टी. मोहन*** *(पंचकूला), मो. 09464544728*

लंगर फंड मोहयाल आश्रम हरिद्वार

डॉ. विजय स्वरूप लौ, ब्लाक–13, म.न. 332 बी, गीता कालोनी, दिल्ली–110031 मो. 9899594651 ने अपने माता–पिता स्व. श्रीमती लाजवन्ती लौ और स्वर्गीय डॉ. देसराज लौ की पुण्य तिथि में 11000 हजार रुपए मोहयाल आश्रम हरिद्वार लंगर फंड हेतु दान दिए।

लंगर की तिथिः 22 दिसंबर

आजादी वर्तमान समय में

ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी।
जो शहीद हुए हैं उनकी, जरा याद करो कुर्बानी।।

स्वतन्त्रता दिवस की सुबह थोड़े बहुत सरकारी स्कूल व कार्यालयों में यह गीत याद दिलाएगा हमें 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजी हुकुमत से आजादी मिली थी और हम लोग प्रत्येक वर्ष शहीदों की कुर्बानी को महज याद करने की पुनरावृत्ति करते रहते हैं। देश को आजादी मिले 69 वर्ष बीत गये, क्या हम वास्तव में आजाद हुए। देखा जाए रोजाना बहु–बेटियों का बलात्कार करने वाले आजाद हैं। आज आजाद हैं वह सरेआम कत्ल करने वाले, आज आजाद हैं शिक्षा का खुला व्यापार करने वाले। स्थिति जैसी की तैसी बनी हुई है। कश्मीर में रहने वाले आतंकवादियों के डर से दूसरी ओर जाकर कैंपों में रह रहे हैंधिं राज्यों में किसान आत्महत्या करने पर मजबूर हैं, ऐसे किसान आजाद हैं। हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं मिल सका, आज भी प्रशासन के कार्य अंग्रेजी में हो रहे हैं। वर्तमान समय में पढ़े–लिखे काबिल एवं जुझारू, कर्मठ व्यक्तियों के होते हुए अंगूठा छाप, गुण्डे किस्म के लोग पैसे के बल पर चुनाव जीत जाते हैं। फिर अपने देश को ही लूटते हैं, विदेशी बैंकों में पैसा रखते हैं अंग्रेजों ने इस देश पर 'फूट डालो राज करो' की नीति का अनुशरण किया, आज का समाज क्षेत्र, भाषा, जाति, धर्म के मुद्दों में उलझ कर रह गया है। स्वतंत्रता की रक्षा के लिए समाज को जोड़ना होगा, नहीं तो देश खंडित हो जाएगा। आज हमें स. भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, लाला लाजपतराय, वीर अब्दुल हमीद, सरदार पटेल, महात्मा गाँधी जैसे देश भक्तों की जरूरत है। हम सभी का कर्त्तव्य है आजादी के अर्थ को सार्थक करें।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा।
सदा शक्ति बरसाने वाला, वीरों को हर्षाने वाला।
प्रेम सुधा बरसाने वाला, मातृभूमि का तन–मन सारा।

रवि बख्शी, *सहारनपुर*

मोहयाल मित्र में रचनाएँ भेजने के पश्चात् प्रकाशन के लिए दो माह तक प्रतिक्षा करें। इसके पश्चात् ही कार्यालय से संपर्क करें। कृपया समस्त रचनाएँ-रिपोर्ट साफ-साफ लिखें जिन्हें पढ़ा जा सके। पोस्ट कार्ड या छोटे-छोटे कागज के टुकड़ों पर लिखकर रचनाएँ न भेजें। ई-मेल से भेजी रचनाएँ और रिपोर्ट साफ-साफ लिख कर भेजें। नहीं तो छप नहीं पाएगी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मोहयाल सभाओं की गतिविधियाँ

अंबाला कैंट

मासिक मोहयाल मीटिंग दिनांक 4.09.2016 को 5 बजे 104 दयाल बाग निवास स्थान श्री धर्मेंद्र वैद, उपस्थिति 18 सदस्य, प्रधान आई. आर. छिब्बर जी की अध्यक्षता में गायत्री मंत्र व मोहयाल प्रार्थना के साथ आरंभ हुई। पिछली मासिक मीटिंग की कार्यवाही पढ़कर सुनाई गई, तथा सर्वसम्मति से अनुमोदन हुआ।

शुभ समाचारः 104 दयाल बाग नव निर्माणित कोठी में श्री धर्मेंद्र वैद पुत्र स्व. कैप्टेन पी.आर. वैद ने 14 अगस्त 16 को शिफ्ट किया तथा श्री धर्मेंद्र जी ने यह प्रथम मीटिंग नए घर पर की। वैद परिवार ने उपस्थित मोहयाल भाई–बहनों हर्षोल्लास से स्वागत तथा आवभगत किया। सबसे पहले डिप्ट. कमां. पी. आर मेहता जी ने अवगत कराया कि जिंदगी में विवाह–शादियां, मकान बनाना/खरीदना तथा जीवन में अन्य कोई खुशी का मौका आना, हमारे पूर्वजों के आशीर्वाद व प्रभु की मेहरबानी से प्राप्त होते हैं। अतः पूर्वजों, बुर्जगों तथा भगवान को सम्मान के साथ याद करते रहें तभी हमारे ऊपर उनकी कृपा बनी रहती है।

इस शुभ अवसर पर प्रधान श्री आई.आर. छिब्बर तथा कमां. पी. आर. मेहता जी ने श्री धर्मेंद्र वैद व उनकी पत्नी सरिता वैद उनके बच्चों सहित उन्हें सभा की ओर से तोहफा भेंट करके

सम्मानित किया तथा नए घर में सुखमय जीवन तथा खुशियों की कामना की।

जन्मदिन मुबारकः सदन ने प्रधान आई.आर. छिब्बर जी के 7.09.2016 को 79वें जन्मदिन पर बधाई दी तथा दीर्घायु की कामना की, साथ ही उन्होंने बताया कि शादी के 50 साल पूरे होने पर 23.09.2016 को गोल्डन जुबली मनाएंगे तथा सारे मोहयाल सादर निमंत्रित हैं। पार्टी का प्रोग्राम कुछ दिनों में बता दिया जाएगा। यह समाचार सुनते ही मुबारकबाद व जय मोहयाल के नारे लगने लगे।

प्रस्तावः सदन ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया कि जीएमएस रिलीफ फंड तथा यमुनानगर मोहयाल सभा द्वारा वार्षिक मोहयाल मेला व भवन आधार शिला के लिए सभा की ओर से प्रत्येक को 3100 रु. भेंट किए जाएं। अगली मासिक मीटिंग श्री पी.आर. मेहता जी ने अपने निवास स्थान पर करने का आग्रह किया।

दान राशिः श्री आई.आर. छिब्बर 500 रु., कमां पी.आर. मेहता 500 रु., श्री धर्मेंद्र वैद 500 रु., एम.एल. दत्ता 251 रुपए, श्री डी.वी. बाली 200 रु. तथा श्री नरेश वैद ने 100 रुपए सभा को भेंट किए।

प्रधान जी ने वैद परिवार को बढ़िया स्वागत, फोटोग्राफी आदि के लिए धन्यवाद करते हुए जय मोहयाल के नारों के साथ सभा संपन्न की।

आई.आर. छिब्बर, *प्रधान* ***एचएफओ एम.एल. दत्ता,*** *महासचिव*
मो.: 9416464488 *मो. 9896102843*

फरीदाबाद

मोहयाल सभा फरीदाबाद की मासिक बैठक 4 सितंबर 2016, को प्रधान श्री रमेश दत्ता जी की अध्यक्षता में मोहयाल भवन में संपन्न हुई, जिसमें लगभग 30 मोहयाल भाई–बहन उपस्थित हुए। मोहयाल प्रार्थना के उपरांत–

शोकः रायज़ादा के.एस. बाली जी के साढू के पुत्र श्री शशी की अकस्मात मृत्यु पर सभी ने दो मिनट का मौन रखा व उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

श्री नगेन्द्र दत्ता, सीनियर वाईस प्रेसिडेंट ने पिछले माह की रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। उन्होंने कहा कि अभी तक दसवीं व बारहवीं के मेधावी छात्रों के फार्म प्राप्त नहीं हुए हैं। वे शीघ्र से शीघ्र फार्म व मार्कशीट की फोटोकॉपी सभा को भेजें जिससे 'प्रतिभाशाली विद्यार्थी सम्मान' का कार्यक्रम जल्द करवाया जा सके। उन्होंने बताया कि हमारी सभा फरीदाबाद के मोहयाल परिवारों की नई डायरेक्टरी छपवाने का प्रयास कर रही है। सभी अपना–अपना सहयोग दें ताकि सभी परिवारों के सही नाम व पते उसमें छप सकें। मोहयाल भवन के हॉल में दो ए.सी. भी लगवाए गए हैं, जिसे देखकर सबने प्रसन्नता जाहिर की।

श्री राजेन्द्र मेहता जी ने योग व गौमूत्र के सेवन से होने वाले लाभों की महत्वपूर्ण जानकारियाँ दीं।

श्री बलराम दत्ता जी ने बताया कि 13 सितंबर 2016 को प्रधान श्री रमेश दत्ता जी का जन्मदिन है व उनके पुत्र श्री ध्रुव दत्ता व पुत्रवधु किम्मी दत्ता की शादी की वर्षगांठ है व आज के भोजन की व्यवस्था भी दत्ता परिवार की ओर से की गई है। सबने श्री रमेश जी को जन्मदिन की शुभकामनाएँ दीं व श्री ध्रुव व श्रीमती किम्मी दत्ता को सुखी वैवाहिक जीवन का आशीर्वाद दिया।

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

श्रीमती बाला बाली व श्रीमती निशा दत्ता ने सुंदर गीत व भजन गाकर वातावरण को मंत्रमुग्ध कर दिया।

श्री नागेंद्र दत्ता जी ने सभा की ओर से श्री रमेश दत्ता जी का स्वादिष्ट भोजन के लिए धन्यवाद किया व बताया कि अगली मासिक बैठक 2 अक्टूबर को मोहयाल भवन में होगी।

रमेश दत्ता, *प्रधान* ***रायज़ादा के.एस. बाली,*** *महासचिव*
मो.: 9212557095, 9999078425 *मो. 9899068573*

नोटः फरीदाबाद मोहयाल सभा बिरादरी के युवक–युवतियों के सामूहिक विवाह कराने की इच्छुक हैं। जो भी अभिभावक अपने बच्चों का विवाह सामूहिक कार्यक्रम में करवाना चाहते हैं, वे प्रधान श्री रमेश दत्ता या सेक्रेटरी जनरल रायज़ादा के. एस. बाली से संपर्क कर सकते हैं।

(मो.) 09212557095, 09899068573

प्रेमनगर-देहरादून

मोहयाल सभा की मासिक बैठक दिनांक 31 जुलाई 2016 को श्री जे.एस. दत्ता कोषाध्यक्ष के निवास स्थान पर हुई। बैठक की अध्यक्षता श्री डी.एन. दत्ता प्रधान जी ने की। बैठक में 30 सदस्य उपस्थित हुए, मोहयाल प्रार्थना के पश्चात सभा की कार्यवाही प्रारम्भ की गई।

सचिव राजेश बाली ने पिछले माह की कार्यवाही पढ़कर सुनाई। कोषाध्यक्ष श्री जे.एस. दत्ता ने आय–व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया तथा सभी ने उसका अनुमोदन किया। देहरादून मोहयाल सभा द्वारा 5 जुलाई 2016 को आयोजित रायज़ादा बी.डी. बाली जी के स्वागत समारोह में हमारी सभा ने भी भाग लिया। रायज़ादा बी.डी. बाली जी ने हमारी सभा के अध्यक्ष श्री डी.एन. दत्ता जी को एक प्रशंसा–पत्र तथा 11000 रु. भेजे।

श्री हर्षवीर मेहता उपप्रधान के सुपुत्र अंकित मेहता, श्री तिलक राज बाली के सुपुत्र श्री निशान्त बाली एवं श्रीमती माधवी दत्ता जी की सुपुत्री अंकुर दत्ता के शुभ विवाह पर सभी ने उनको बधाई दी। प्रो. कमल रतन वैद एवं श्री वेद प्रकाश मोहन जी ने विवाह के आयोजन की प्रशंसा की। श्रीमती माधवी दत्ता ने अपनी सुपुत्री अंकुर दत्ता शादी के शुभ अवसर पर सभा को 251 रु. तथा जीएमएस को भी 251 रुपए भेंट किए।

अन्त में प्रधान श्री डी.एन. दत्ता ने श्रीमती एवं श्री जे.एन. दत्ता अपने निवास स्थान पर मीटिंग करवाने तथा भोज एवं जलपान के लिए धन्यवाद दिया।

■ सभा की मासिक बैठक दिनांक 28 अगस्त 2016 को उप–प्रधान श्री हर्षवीर मेहता के निवास स्थान पर हुई। बैठक की अध्यक्षता श्री डी.एन. दत्ता, प्रधान ने की, बैठक में 32 सदस्यों ने भाग लिया। मोहयाल प्रार्थना के पश्चात् कार्यवाही आरम्भ की गई। सचिव श्री राजेश बाली जी ने गत माह की कार्यवाही पढ़कर सुनाई तथा श्री जे.एस. दत्ता ने आय–व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया, सभी ने उसका अनुमोदन किया।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर सभा की ओर से खीर, प्रसाद वितरण किया गया। सभी सदस्यों ने बढ़–चढ़कर भाग

लिया। प्रो. कमल रतन वैद जी ने सुझाव दिया कि सभी सदस्यों के जन्मदिन पर सभा की ओर से सुन्दर कार्ड द्वारा शुभकामनाएँ भेजी जाएं।

श्री डी.एन. दत्ता की पोती सानवी दत्ता (सुपुत्री ले.कर्नल देवन दत्ता एवं श्रीमती गगनप्रीति दत्ता) ने रोलर स्केटिंग प्रतियोगिता के प्रथम स्थान प्राप्त किया, सभी ने बधाई दी। यह प्रतियोगिता 22 अगस्त 2016 को बीकानेर में आयोजित की गई थी। श्री रमेश दत्ता जी तथा श्री हर्षवीर मेहता ने सुझाव दिया कि श्री गुरू नानक देवजी के प्रकाश उत्सव के अवसर पर नगर कीर्तन के अवसर पर प्रसाद वितरण किया जाए, सभी ने समर्थन किया। सचिव श्री राजेश बाली ने बताया कि उन्होंने फेसबुक पर मोहयाल सभा प्रेमनगर के नाम से एक एकाउंट बनाया है। सभी सदस्यों से प्रार्थना की कि वह इस ग्रुप से जुड़ें। श्री हर्षवीर मेहता ने सभा को 501 रुपए भेंट किए।

अन्त में प्रधान श्री डी.एन. दत्ता ने श्रीमती एवं श्री हर्षवीर मेहता को जलपान एवम् भोज के लिए धन्यवाद दिया।

राजेश बाली, *सचिव (मो.) 9758135583*

कुरूक्षेत्र

मोहयाल सभा कुरूक्षेत्र की मासिक मीटिंग शिव मंदिर सेक्टर 3, कुरूक्षेत्र में प्रधान श्री संतोष वैद की अध्यक्षता में 18 सदस्यों ने भाग लिया, मोहयाल प्रार्थना के साथ मीटिंग आरम्भ हुई।

शोक समाचारः शहीद मेजर नितिन बाली के पिता श्री एस.एस. बाली जी के निधन पर गहरा शोक प्रकट किया गया तथा उनकी आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। श्रीमती आदर्श बाली जी ने रस्म–पगड़ी पर लोकल सभा व जी.एम.एस को एक हजार प्रत्येक को दिया। रस्म–पगड़ी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पर जनरल मोहयाल सभा के प्रधान श्री बी.डी. बाली जी पधारे व दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि दी।

सभा के सदस्यों द्वारा मोहयाल भवन की जमीन के बारे सांसद व क्षेत्र के विधायक को मिलने का प्रोग्राम बनाया गया। सभी सदस्यों को मोहयाल दिवस के अवसर पर 11.09.2016 को यमुनानगर में पहुँचने का न्यौता दिया गया। मोहिंदर बक्शी जी द्वारा जलपान की व्यवस्था की गई।

शांति पाठ के साथ सभा समापन हुई।

संतोष वैद, *प्रधान*

नजफगढ़-नई दिल्ली

मोहयाल सभा नजफगढ़ की मासिक बैठक 04.09.2016 को प्रधान श्री शेरजंग बाली की अध्यक्षता में श्री हर्ष दत्ता, सचिव के निवास स्थान (दत्ता प्लाजा 22 ओल्ड रोशनपुरा, नजफगढ़ नई दिल्ली–43) में मोहयाली प्रार्थना व गायत्री मंत्रोच्चारण के साथ आरम्भ हुई, जिसमें 10 भाई–बहनों ने भाग लिया। सभा के सचिव श्री हर्ष दत्ता जी ने पिछले माह की कार्यवाही पढ़कर सुनाई, वित्त सचिव श्री बलदेव राज दत्ता जी ने लेखा–जोखा पेश किया, जिसका सब सदस्यों ने अनुमोदन किया।

प्रतिभाशाली मोहयाल विद्यार्थी सम्मान–2016: प्रधान जी ने सूचित किया कि 10वीं व 12वीं कक्षा में 85 प्रतिशत और इससे अधिक अंक से उत्तीर्ण मोहयाल विद्यार्थियों को जी.एम.एस. द्वारा सम्मानित किया जाएगा। फार्म जमा करने की अंतिम तारीख 30 सितंबर 2016 है। फार्म सितंबर 2016 मोहयाल मित्र पेज नं. 38 पर प्रकाशित है।

प्रधान जी ने अनुरोध किया कि बैठक में अधिक से अधिक सदस्य भाग लें ताकि बिरादरी में मेल जोल बना रहे। अंत में सभी ने बढ़िया जलपान के लिए श्री हर्ष दत्ता को धन्यवाद दिया।

अगली मासिक बैठक 2 अक्तूबर 2016 को श्रीमती उषा बाली जी के निवास स्थान (एम–86ए, न्यू रोशनपुरा नजफगढ़, नई दिल्ली–43) में प्रातः 10:30 बजे होगी। सभी सदस्यों से उपस्थित होने का निवेदन है।

शेरजंग बाली, *प्रधान* — *मो:9871756765*

हर्ष दत्ता, *सचिव* — *मो. 9312174583*

स्त्री सभा यमुनानगर

स्त्री सभा की मासिक मीटिंग श्री रमन जी के निवास स्थान पर गायत्री मंत्र के साथ सभा की अध्यक्षता श्रीमती कमला दत्ता जी ने की। सभा में सभी बहनों ने भाग लिया।

सभा में सबसे पहले स्वर्गीय चंद्र दत्ता जी की मृत्यु पर दो मिनट का मौन रखा गया। उनकी याद में श्रद्धा–सुमन अर्पित किए। वे मोहयाल सभा यमुनानगर के वित्त सचिव थे। उन्होंने आजीवन मोहयाल बिरादरी के लिए कई कार्य किए। वे सच्चे समाज सेवक थे। उन्होंने अन्य संस्थाओं के साथ भी मिल कर समाज के लिए काफी कार्य किए। उनकी पत्नी स्वर्गीय श्रीमती कैलाश दत्ता जी ने भी आजीवन मोहयाल बिरादरी के लिए कार्य किए। अब आगे दत्ता जी के बच्चे भी मोहयाल बिरादरी के साथ जुड़ कर कार्य कर रहे हैं। दत्ता जी के जाने से मोहयाल बिरादरी यमुनानगर को काफी धक्का लगा। भगवान उनकी आत्मा को शांति दें, उनके पुत्रों और पुत्रवधुओं, बेटियों को दुःख सहने की शक्ति दे।

सभा में सभी बहनों ने श्रीमती सूरज वैद जी को उनकी पोती के 85 प्रतिशत अंक आने पर बधाई दी। सभा में श्रीमती प्रेम दत्ता, श्रीमती विजय लक्ष्मी दत्ता, श्रीमती अनिता जी ने अपने विचार रखे।

शांति पाठ के साथ सभा की समाप्ति हुई।

श्रीमती परवीन बाली, *सचिव*

आगरा

मोहयाल सभा आगरा की मासिक बैठक सभा के संयोजक श्री कामरान दत्ता जी के निवास स्थान 206, डिफेंस कॉलोनी, आगरा पर 04.09.2016 को संपन्न हुई, जिसमें 15 भाई–बहिनों ने भाग लिया तथा अपने विचारों से अवगत कराया।

सर्वप्रथम सभा के उपाध्यक्ष (कार्यवाहक अध्यक्ष) श्री अनिल मेहता (बब्बी) एवं अशोक मेहता की पूज्य माता जी स्व. श्रीमती कृष्णा मेहता पत्नी स्व. श्री बी.एम. मेहता बल्केश्वर आगरा के निधन 22.08.2016 पर सभी सदस्यों ने खड़े होकर दो मिनट का मौन रख कर शोक प्रकट किया और प्रभु से उनकी आत्मा की शाति हेतु गायत्री मंत्र का उच्चारण किया।

तदोपरांत सभी सदस्यों ने अपने विचारों और समस्याओं से अवगत कराया। अधिकांश लोगों ने 'मोहयाल मित्र' न आने की शिकायत की, जिस पर सचिव महोदय द्वारा दिल्ली में फोन द्वारा संपर्क करने पर ज्ञात हुआ कि उनमें से अधिकांश सदस्यों ने सालाना नवीनीकरण नहीं कराया है तथा सचिव द्वारा सभी सदस्यों को नवीनीकरण कराने को कहा गया।

श्री गुलशन जी, श्री रजत वैद द्वारा मोहयाल सभा आगरा की बेबवाइट बनाने का सुझाव दिया, जिससे सभी भाई बहिनों में से एक ही बार में बात हो सके व अगली मीटिंग और कार्यकरिणी की जानकारी सभी को एक साथ मिल सके व एक आई.डी कार्ड बनाने का सुझाव भी रखा

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

गया, जिसे सर्वसम्मति से पास कर दिया गया व श्री अनजान दत्ता व श्रीमती योग्यता दत्ता द्वारा उसी समय मोहयाल सभा आगरा के नाम से एक एकाउंट खोल दिया, जिसमें सभी उपस्थित सदस्यों की मोबाइलों द्वारा एक दूसरे को आगरा मोहयाल सभा से जोड़ दिया तथा सभी सदस्यों को भी जोड़ने का प्रयास किया। आगरा के सभी मोहयाल सदस्यों से अनुरोध है कि वे अपने–अपने नम्बर श्री कामरान दत्ता जी को उपलब्ध कराऐं, जिससे उन सभी को मोहयाल सभा आगरा के साथ जोड़ा जा सके।

इस माह जन्में श्री अनजान दत्ता, ममता दत्ता, अमित दत्ता, श्रीमती गुंजन आदि के जन्मदिनों पर सभी सदस्यों द्वारा मुबारकबाद दी गई। सचिव महोदय द्वारा संयोजक महोदय को अपने पिछले माहों का लेखा–जोखा बताया तथा सभी ने उसको सर्वसम्मति से पास कर दिया।

सभा के अंत में सभी भाई–बहनों ने गायत्री मंत्र जय मोहयाल के उद्घोषों से सभा का सचिव द्वारा समापन करने की अनुमति श्री कामरान जी द्वारा प्रदान करने की अनुमति माँगी तथा सचिव ने श्री कामरान जी के परिवार वालों को सभा के सफल संचालन व आवभगत के लिए धन्यवाद दिया। जिस पर श्री कामरान जी ने अपने परिवार की ओर से आए हुए सदस्यों को बहुत–बहुत धन्यवाद दिया।

एस.पी. दत्ता, *सचिव (मो. 9897455755)*

बराड़ा

मोहयाल सभा बराड़ा की मासिक बैठक दिनांक 4.09.2016 को सभा के प्रधान हरदीप सिंह वैद जी की अध्यक्षता में गायत्री मंत्रोच्चारण व मोहयाली प्रार्थना के बाद भाई लक्ष्मण देव छिब्बर जी के निवास स्थान पर सम्पन्न हुई, जिसमें 10 भाई–बहनों ने भाग लिया। सभा के वित्त सचिव श्री बलदेव सिंह दत्त जी ने पिछले माह की कार्यवाही पढ़कर सुनाई, जिस पर सभी ने अपनी सहमति प्रकट की।

सभा में आए हुए सभी सदस्यों को सूचित किया गया कि यमुनानगर में 11.09.2016 को मोहयाल दिवस मनाया जा रहा है व मोहयाल भवन का नींव पत्थर रखा जा रहा है, इसलिए सभी मोहयाल भाई अधिक से अधिक संख्या में यमुनानगर पहुँचे।

अन्त में जलपान के लिए सभी ने भाई लक्ष्मण देव छिब्बर परिवार का धन्यवाद किया।

रविन्दर छिब्बर, *सेक्रेटरी मो. 9466213488*

निबन्ध प्रतियोगिता:–

वरिष्ठ नागरिकों की समस्याऐं व निदान

मैं अपने पुत्र के जन्मदिवस पर, निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित करवाना चाहता हूँ, आशा है इसमें आप सहयोगी होंगें। निबंध का विषय वरिष्ठ नागरिकों की समस्याऐं एवं निदान जहाँ तक हो 350 शब्दों से अधिक न हो।

निबन्ध का विषय: वरिष्ठ नागरिकों की समस्याऐं एवं निदान निबन्ध भेजने की तिथि – 20.10.2016

अंतिम तिथि–15.11.2016

1. निबन्ध केवल हिन्दी भाषा में लिखा होना चाहिए।
2. रचना के साथ नवीनतम पास पोर्ट साईज फोटो तथा फोटो के पीछे रचनाकर्त्ता के हस्ताक्षर एवं बड़े अक्षरों में नाम लिखा हो।
3. रचना स्वथ लिखित एवं मौलिक हो, इस संबन्ध में रचना के साथ लिखित प्रमाण पत्र अवश्य संलग्न करें।
4. रचना केवल साधरण डाक द्वारा भेजें।
5. रचना स्पष्ट साफ लिखी या टाइप की हो। रचना कट्टी–फट्टी न हो, साफ व सुपाठ्य हो।
6. गुम हुई व देर से पहुँची, रचना प्रतियोगिता में शामिल नहीं की जाएगी।
7. मोहयाल सभा एवं जीएमएस के पदाधिकारी भाग नहीं ले सकेगें, अन्य सभी वरिष्ठ मोहयाल इसमें भाग ले सकेंगे।
8. प्रतियोगिता आयोजक का रचनाओं पर पूर्ण अधिकार माना जायेगा, वह रचना का प्रयोग जनकल्याण एवं भलाई हेतु करने में सक्षम होगा।

रचना निर्णयक मंडल–

1. डा. अशोक लव, संपादक एवं साहित्यकार
2. श्रीमती पूनम बक्शी, डाक्टर एवं रिट. प्रिंसीपल
3. श्रीमती सोनिका बक्शी, उपनिदेशक चित्रकार
4. श्री राम स्वरूप, प्रबंधक एम.एस अंबाला
5. श्री बलदेव कुमार बाली (सेवानिवृत्त) समाज सेवक
6. श्री रुपेश कुमार बाली समाज सेवक व एल.आई.सी जिला प्रबधक
7. कर्नल बी.एन बाली प्रमुख समाज सेवक

प्रतियोगिता पुरस्कार राशि–

प्रथम पुरस्कार–विजेता को 5000 रुपए

दिव्तीय पुरस्कार–विजेता को 3000 रुपए

तृतीय पुरस्कार–विजेता को 2000 रुपए

प्रतियोगिता आयोजक श्री बलदेव कुमार बाली, भूतपूर्व उपप्रधान एमएस अंबाला शहर।

पुरस्कार वितरण–श्री बी.डी. बाली, प्रधान जीएमएस

पुरस्कार वितरण तिथि–29.10.16–30.10.2016

अधिक जानकारी के लिए तथा निबंध भेजने का पता–

श्री बलदेव कुमार बाली, *204/8, प्रेम नगर, अंबाला शहर मो. 9873858557*

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

श्री सुरेन्द्र प्रकाश वैद की सातवीं पुण्य-तिथि

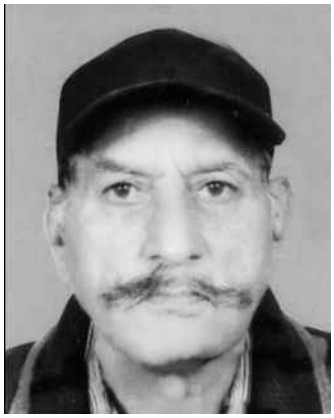

श्री सुरेन्द्र प्रकाश वैद पुत्र स्व. श्री मुलकराज वैद एंव समाज सेवी एवं कर्त्तव्य परायण व्यक्ति थे, वे हमेशा गरीबों की मदद करते थे, विनम्र स्वभाव के व्यक्ति थे। उनकी याद में कुछ पंक्तियां.....

वो आखिरि पल नहीं भूलती
किसी भी हाल में।
तुम जिंदगी की डोर थामे हुए
थे अस्पताल में।।
मुझसे तक कहा गया कि आने में देर हो चुकी है।
लगा जैसे खुशियों की दुनिया ढेर हो चुकी है।।
लेकिन मौत की फरिश्तों से छुपते छुपाकर।
रखा था तुमने कुछ साँसों को बचाकर।।
मेरी उँगलियों को तुम्हारे हाथों ने जकड़ लिया था।
कुछ न कहकर भी तुमने कितना कुछ कह दिया था।।
तुमसे थी सारी मुस्कुराहटें, तुम खुशियों के जहां थे।
मेरे आँसू तब तक सुख चुके थे, जब तुम बेजुबां थे।।
अब तो बस तुम्हारी तस्वीरों से बातें कर लेती हैं।
दिल कागज बन जाता है, जिस पर दर्द लिख देती हूँ।।
उसी दर्द की दबी हुई आवाज में.....
लिखे हुए हर अल्फाज़ में.....
तुम्हारी सुनीता

उनकी पुण्य स्मृति में 250 रु. जीएमएस विधवा फंड में दान दिए।

श्रीमती सुनीता वैद (धर्मपत्नी), पलक वैद (पुत्री)
डी–165, गणेश नगर, पाण्डव नगर, दिल्ली–110092

श्रद्धांजलि

''मोहयाल मित्र'' में आदरणीय भाई वेद व्यास जी के अकाल निधन का समाचार पढ़ कर अत्यन्त दुःख हुआ। भाई जी से मेरा परिचय 'मोहयाल मित्र' के द्वारा ही हुआ था। हम कभी मिले नहीं। वे मुझे अपनी पुस्तकें भेजते थे, मैं उन्हें भेजती थी। वे मुझे बड़ी बहिन मानते थे। वे विद्वान, साहित्यकार और उड़ी–मेण्ढर वीरम शाही गुरू–गद्दी को सुशोभित कर रहे ध र्म–गुरू थे।

कुछ वर्ष पूर्व मैं संगत के साथ चट्टानी बाबा अमरनाथ की यात्रा पर गई थी। ''मो. मित्र'' में मेरे यात्रा विवरण पढ़ कर उन्होंने मुझे फोन किया, ''मैं कितना बदनसीब भाई हूँ। मेरी बड़ी बहिन मेरे घर के पास से निकल जाए, और मुझे न मिले।'' मैंने उनकी आवाज़ पहचानी नहीं। सोचने लगी कि जम्मू में मेरा कौन रिश्तेदार है। यदि पूछती हूँ कि मैंने आपको पहचाना नहीं, तो अच्छा नहीं होगा। इतने में उन्होंने पूछा, मेरी पुस्तक 'बंदा बहादुर' मिल गई क्या? मैंने उन्हें पहचान लिया और कहा, ''मैं 10 तीर्थ–यात्रियों के साथ वीरम शाह आश्रम पुंछ में गई थी, वहाँ जाकर पता लगा कि आप दूसरी गद्दी को सुशोभित कर रहे हैं। भाई जी ने उत्तर दिया, ''वहाँ मेरे भाई हैं। यदि मुझे पहले सूचना मिली होती, तो मैं पूरी बस के यात्रियों के ठहरने का प्रबंध अपने यहाँ कर लेता। अब आप फिर आइए, अपने छोटे भाई के घर।''

अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कान्ता दत्ता के अकाल निधन से भाई जी बुरी तरह टूट चुके थे। उनका वेदना भरा पत्र मुझे मिला। मैंने उन्हें महाराजा दशरथ के पिता महाराजा 'अज' का उदाहरण दिया। उनकी प्रिय महारानी का देहान्त असमय हो गया। वे यह शोक सह नहीं सके, उन्होंने खाना–पीना छोड़ दिया। ऋषि–मुनियों ने उन्हें समझाया, ''महाराज, आपका दायित्व केवल परिवार तक ही सीमित नहीं, आप ने प्रजा की देख–भाल करनी है, अतः स्वयं को संभालिए।'' आप भी गुरू–गद्दी को सुशोभित कर रहे हैं। आप धर्म–गुरू हैं और समाज सेवा भी कर रहे हैं, आप पर भी बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। अतः अपनी सेहत का ध्यान रखिए।

भाई वेद व्यास जी के अकाल निधन से उड़ी–मेण्ढर के लोगों के लिए बड़ी क्षति हुई है। मोहयाल बिरादरी ने भी एक धार्मिक नेता, विद्वान साहित्यकार खो दिया है। उन्हें शत्–शत् प्रणाम!

लज्जा देवी मोहन, *(मो. 09671432717)*

श्राद्ध

श्राद्ध– उचित समय पर शास्त्र सम्मत विधि द्वारा श्रद्धा भाव से मंत्रों द्वारा किया गया दान–दक्षिणा आदि कार्य श्राद्ध कहलाता है। इसके मुख्य देवताः वसु, रुद्र एवं आदित्य हैं।

प्रत्येक मनुष्य के तीन पूर्वज, पिता, दादा, परदादा क्रमशः वसु, रुद्र, व आदित्य के समान माने जाते हैं। उचित रीति रिवाज से की गई पूजा–दान आदि से तृप्त होकर हमारे पूर्वजों तक पहुँचा देते हैं। सुख, समृद्धि व स्वास्थ्य का वरदान देते हैं।

श्राद्ध कबः जिस पखवाड़े की जिस तिथि को मृत्यु होती है श्राद्ध के दिनों में उसी तिथि या न पता होने की स्थिति में अमावस्या के दिन सभी पितरों के लिए दान–दक्षिणा पूजा आदि किया जा सकता है।

साधारणतया पुत्र ही अपने पूर्वजों का श्राद्ध करता है। किन्तु जिस व्यक्ति ने पूर्वज की सम्पत्ति पाई हो या जिस गुरु से शिष्य ने शिक्षा पाई हो शिष्य उस गुरु का भी श्राद्ध कर सकता है। पुत्र की अनुपस्थिति में पौत्र या प्रपौत्र श्राद्ध कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। किन्तु निःसन्तान पत्नि को पति द्वारा, पिता द्वारा पुत्र को, बड़े भाई द्वारा छोटे भाई को पिण्ड दान

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

नहीं दिया जाता हैं। अपने कुल पुरोहित द्वारा यह कार्य सम्पन्न करायें।

कुश व तिलः ऐसा माना जाता है कि कुश व तिल श्री विष्णु के शरीर से निकले हैं। ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश कुश में क्रमशः जड़, मध्य एवं अग्र भाग में रहते हैं। अतः कुश का अग्र भाग देवताओं का मध्य भाग मनुष्यों एवं जड़ पितरों का माना जाता हैं। तिल पितरों को प्रिय होता है एवं दुशत्माओं को दूर भगाने वाला होता है।

मनुष्य के स्थूल शरीर को अग्नि या जल को समर्पित करने के पश्चात् भावनात्मक रुप से "भावना शरीर" की पूजा करके दान–दक्षिणा द्वारा उनका सम्मान करके उनसे आशीर्वाद प्राप्त करके अमावस्या की शाम को दीये आदि अपने मुख्य द्वार पर जलाकर उन्हें विदा करते हैं।

वैद्य विरेन्द्र छिब्बर *(मो.) 9818094655*

शिकायत

जब भी हम किसी दर्द या मुसीबत में होते हैं तो शिकायत को अपना जरिया बनाकर अपनी तकलीफ या दर्द को दूर करने का प्रयास करते हैं हर किसी की शिकायत अलग–अलग होती है, क्योंकि हर किसी की तकलीफ़ भी अलग–अलग होती है। कभी भगवान से तो कभी अपनो से तो कभी आस–पड़ोस से और हम लोग तो ऐसी मिट्टी के बने हैं कि कभी–कभार अनजानों से भी शिकायत कर बैठते हैं। और मज़ेदार बात यह है कि शिकायत करने में कोई उम्र मायने नहीं रखती, कोई समय नहीं देखा जाता, बस मौका मिलना चाहिए, हम शिकायत कर बैठते हैं।

भगवान आपने ऐसा क्यों किया? ऐसा क्यों नहीं किया? उसे इतना दिया हमें इतना क्यों नहीं दिया। यही नहीं एक पाँच साल का बच्चा भी जिसे दुनियादारी की समझ भी नहीं वह भी अपनी माँ से शिकायत कर बैठता है कि आप भैया या दीदी को ज्यादा प्यार करते हो? मुझे नहीं। यही नहीं स्कूल में क्या–क्या हुआ अच्छा या बुरा सभी बातों की सूची एक शिकायत की बोरी में बंद होती है जो घर आते ही खुल जाती है।

बच्चों की शिकायतें उनके क्षेत्र की तरह सीमित है पर जैसे–जैसे हम बड़े होते हैं शिकायतें हमारी सोच व जरूरतों के अनुसार बड़ी होती जाती हैं। हमारी लालसाएँ हमारी शिकायतों को बड़ा बना देती हैं। कभी बच्चों को अपने माता–पिता से तो कभी माता–पिता को अपने बच्चों से शिकायतें होती हैं। पत्नी को पति से, पति को पत्नी से शिकायतें भी इसी सूची का हिस्सा है। कभी मालिक को नौकर से तो नौकर को मालिक से शिकायत होती है। सरकार और जनता भी एक–दूसरे शिकायतें लिए बैठी हैं। कभी–कभी यह शिकायतें बड़ी–बड़ी उलझनों को सुलझा देते हैं तो कभी–कभी उलझनों को पैदा कर देती है। पर यह सभी उलझनों को पैदा कर देती है। पर यह सभी उलझनों को सुलझना निर्भर करता है हमारी आपसी सोच और समझ पर।

अगर हम शिकायतों में रहते हुए महसूस करें तो पाएँगे तो प्यार वो अधिकार वो अपनापन जो हमें शिकायत करने का हक या अधिकार देता है। क्योंकि जब हम किसी से शिकायत करते हैं तो उम्मीद व आशाएँ जुड़ जाती है। क्योंकि हमें विश्वास है कि वह हमारी बात को समझेगा और अपनाएगा। तो क्यों न हम इन शिकायतों को चाहे अपनो से हो या बैगानों से प्यार और समझदारी से सुलझा ले ताकि किसी को किसी की शिकायत बोझ न लगे।

प्रिया बाली, *(मो.) 9873992990*

गीता-सार

- क्यों व्यर्थ में चिन्ता करते हो? किससे व्यर्थ डरते हो? कौन तुम्हें मार सकता है? आत्मा न पैदा होती है, न मरती है।
- जो हुआ, वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है। जो होगा, वह भी अच्छा ही होगा। तुम भूत का पश्चाताप न करो। भविष्य की चिन्ता न करो। वर्तमान चल रहा है।
- तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो? तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया? खाली हाथ आए, खाली हाथ चले गए। जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझकर खुश हो रहे हो। बस यही तुम्हारे दुःखों का कारण है।
- परिवर्तन ही संसार का नियम है। मेरा–तेरा, छोटा–बड़ा, अपना–पराया मन से मिटा दो, विचार से हटा दो, अब तुम सबके हो।
- न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम शरीर के हो। यह अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश से बना है और इसी में मिल जायेगा। परन्तु आत्मा स्थिर है, तुम अपने आपको भगवान को अर्पित करो। यही सहारा है। जो इस सहारे को जानता है, वह भय, चिन्ता शोक से सर्वदा मुक्त हो जाता है। सब कुछ भगवान को अर्पण कर, तो तू जीवन मुक्त हो जाएगा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

गायत्री महामंत्र

ओउम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो।
देवस्य धीमहि, धियो योनः प्रचोदायत्।।

शब्दार्थ –

ओइम् – सर्वरक्षक परमात्मा अर्थात् जो सब की रक्षा करने वाला है।

भुवः – प्राणों से प्यारा अर्थात् जो हमें बहुत चाहता है, जो प्राणों से भी अधिक है।

स्वः – सुख स्वरूप है अर्थात् सभी प्रकार के सुखों को देने वाला है और वह स्वयम् सुख का स्वरूप है।

तत् – उस अर्थात् वह महाशक्ति जिसने इस संसार की रचना की है।

सवितुः – उत्पादक, प्रेरक अर्थात् संसार को प्रकाश देने वाला और प्रेरणा देने वाला है।

देवस्य – भगवान के, इष्ट के अर्थात् देवस्वरूप परमात्मा है।

वरेण्यं – वरने योग्य अर्थात् वह धारण करने योग्य है, अपनी आत्मा में समाने योग्य है।

भुर्गः – शुद्ध ज्ञान का स्वरूप अर्थात् परमात्मा हमारी बुद्धि को अज्ञान से मुक्त कर ज्ञान का प्रकाश करने वाला है।

धीमहि – हम ध्यान करें अर्थात् हमें उसका सिमरन करना चाहिए, उसका मनन करना चाहिये।

यः – जो अर्थात् वह परमात्मा हमारा रक्षक सुख देने वाला, ज्ञान का प्रकाश करने वाला है।

नः – हमारी अर्थात् वह परमशक्ति हमारी रक्षा करने वाली है।

धियो – बुद्धियों को अर्थात् वह हमारी बुद्धि को ज्ञान रूपी प्रकाश देता है।

प्रचोदयातः – शुभ कार्यों में प्रेरित करें अर्थात् उससे प्रेरित होकर शुभ कार्य करने चाहियें।

गायत्री महामन्त्रा चारों वेदों का सूक्ष्म रूप है जिसे चौबीस ऋषियों की चौबीस ऋचाएँ भी कहा जा सकता है। इस महामन्त्र का भाव हैः– उस प्राण स्वरूप, दुखनाशक, सुखों का दाता, श्रेष्ठ, तेजस्वी पापनाशक, देव स्वरूप परमात्मा को हम अन्तरात्मा में धारण करें ताकि वह परमपिता परमात्मा हमारी बुद्धि को शुभ एवं अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित करे।

यदि हम अधिक भजन–पाठ नहीं कर सकते क्योंकि इस भौतिकवादी युग में समय निकालना आसान नहीं फिर भी इस लोक और परलोक को ध्यान में रखते हुए इस मन्त्र का प्रातः या सायं एक बार अवश्य जाप करना चाहिये। यह मंत्र ज्ञान का दीप और श्रृद्धा की जाती है जो कि शुद्ध मनोरथ को देने वाला है। इसका जाप करने से प्राणी संकट से मुक्ति पाता है, सुख – सम्पदा को प्राप्त करता है और मुक्ति भुक्ति को सरलता से पा लेता है।

।। मोहयाल प्रार्थना ।।

ऊँ स्वस्ति। ऊँ परम पिता परमात्मा को हमारा प्रेमपूर्वक नमस्कार। ऊँ स्वस्ति। सभी सुखी हों। सब का कल्याण हो। सबका आपस में प्रेम हो। सब मिलकर अपने समाज की भलाई का विचार करें। सब उसी में अपना भला समझें जिसमें सबका भला हो, हित हो, लाभ हो। मन, वचन और कर्म से कोई दूसरे की हानि न करे। हम एक दूसरे के प्रति प्रेम भाव रखें। दूसरों की बातों को धैर्य और शांतिपूर्वक सुनें। अपनी बातें मधुर शब्दों में कहें। हम निःस्वार्थ भाव से अपने समाज की भलाई के लिए कार्य करें।

जय मोहयाल

मोहयाल मित्र के लेखकों से अनुरोध

'मोहयाल मित्र' में केवल उन्हीं रचनाओं को प्रकाशित किया जाएगा जिनके साथ लेखक, रिपोर्ट भेजने वाले का पूरा पता होगा। लेखक अपने हस्ताक्षर करके अवश्य लिखें कि यह उनकी मौलिक रचना है। दूसरों की रचनाओं की प्रस्तुति के साथ भूल लेखक/कवि का नाम भी अवश्य लिखें।

प्रत्येक रचना में अभिव्यक्त विचार, रचनाएँ लेखक या भेजने वाले के होते हैं। इनके साथ संपादक और प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रत्येक प्रकाशित रचना, रिपोर्ट के लिए लेखक उत्तरदायी होगा। विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

कृपया ई–मेल द्वारा रचनाएँ न भेजें।

केवल वही रचनाएँ, रिपोर्ट आदि प्रकाशित की जाएँगी जो 'जनरल मोहयाल सभा' कार्यालय में प्राप्त होंगी। संपादकों के निवास पर भेजी रचना प्रकाशित नहीं की जाएँगी।

पुस्तक की समीक्षा प्रकाशित कराने के लिए पुस्तक की एक प्रति अवश्य भेजें।

किसी त्योहार, विशेष दिन संबंधी रचनाएँ एक महीना पहले भेजें। एक साथ तीन–चार रचनाएँ न भेजें। पहले भेजी रचना प्रकाशित होने पर ही अगली रचना भेजें।

मोहयाल मित्र संबंधी प्रत्येक जानकारी के लिए केवल जी. एम.एस. कार्यालय से संपर्क करें। फोनः 011–26560456

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor